

महम्. — S. 152. Z. 16. तद् st. न. — S. 153. Z. 7. सर्वथा st. सर्वदा. — S. 154. Z. 8. अत्रात्तरे (schon von Lassen vorgezogen) st. तत्रात्तरे; vgl. S. 159. Z. 13. — S. 154. Str. 5 a. सुभिते राष्ट्रविप्लवे st. दुर्भिते राष्ट्रसंप्लवे (die andern Ausgaben : दुर्भिते राष्ट्रविप्लवे) — S. 154. Z. 19. त्वयोच्यते तद्वया क° st. त्वया वक्तव्यं तत्क°. — S. 157. Z. 1. Nach हा कृतो ऽस्ति hat die Bonner Ausgabe noch Folgendes :

यतः । तावद्द्वयस्य भेदव्यं वावद्द्वयमनागतं ।

आगतं च भयं वीक्ष्य नरः कुर्याद्यथोचितं ॥

S 157. Str. 2. b. पार्श्वगतात् (eine Conjectur von Lassen) st. पार्श्व-  
गताम्. — S. 159. Z. 13. Die Bonner Ausgabe : अथ तयोः पादास्फा-  
लनेन सर्पो ऽपि मृतः । अत्रात्तरे u. s. w. — S. 159. Z. 2. v. u. Nach  
भविष्यति fügt die Bonner Ausg. folgende Strophe hinzu :

मासमेकं नरो याति द्वौ मासौ मृगशूकरौ ।

अत्रिरेकं दिनं याति अथ भक्ष्यो धनुर्गुणाः ॥

S. 160. Z. 6. एकदा fehlt in der B. A. — S. 161. Z. 4. तत्र fehlt  
in der B. A. — S. 161. Z. 5. एकाम् st. एकामेकाम्. — S. 161. Z. 7.  
समर्पयति st. समर्प्य. — S. 161. Z. 14. आलोक्य st. अवलोक्य. — S. 161.  
Z. 17. एव fehlt in der B. A. — S. 162. Z. 15. तम्बुकस् fehlt in der  
B. A. — S. 163. Z. 13. Die B. A. fügt कथम् (fehlt in der Calc.  
Ausg.) nach स्वामिनम् hinzu. — S. 165. Z. 18. तदा घण्टाकर्णमहम्  
st. तदाहमेनं घण्टाकर्णम्. — S. 169. Z. 3. भार्ये und प्रसूतियोग्यम् feh-  
len in der B. A. — S. 169. Z. 4, 5. स्वगृहावस्थितः (eine Conjectur  
von Lassen) समुद्रेण नियन्त्री° st. स्वगृहावस्थितसमुद्रेण विन्यन्त्री°. —  
S. 169. Z. 6. Die B. Ausgabe : टिटिभो ऽवदत् अथवा